Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में नाथ सम्प्रदाय का योगदान

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post – Kharwar, District-Rohtak, Haryana

सार – नाथों की संख्या नौ मानी गई है। 'शिव' ही आदिनाथ हैं। नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ माने गये हैं। नाथों का समय 12 वीं से 14 वीं शती तक है तथा हिन्दी संतकाव्य पर इनका पर्याप्त प्रभाव है। डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ की रचनाओं का संकुलन गोरखबानी नाम से किया है। गोरखनाथ की रचनाओं में गुरू महिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण साधना, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण एवं शून्य समाधि का वर्णन है। गोरखनाथ ने षट्चक्रों वाला योग मार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया।

----------X----------

नाथ सम्प्रदाय का परिचय:

गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को नारी से दूर रहने का उपदेश दिया। कबीर साहित्य में उपलब्ध नारी विरोध इसी का परिणाम है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ''इनकी सबसे बड़ी कमजोरी इनका रूखापन एवं गृहस्थ के प्रति अनादर भाव है।'' गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उनके पश्चात् मत्स्येन्द्रनाथ हुए, जिसकके आचरण का विरोध उनके शिष्य गोरखनाथ ने किया। राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय 845 ई. माना है, नवीन खोजों के अनुसार यह धारणा अधिक प्रबल हुई है कि गोरखनाथ ने ईसा की तेरहवीं सदी के आरम्भ में अपना साहित्य लिखा था।

नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख प्रवर्तक:

नाथ साहित्य में बहुत से कवियों ने अपना योगदान दिया। लेकिन डॉ. रामकुमार वर्मा ने जिन नौ नाथों के बारे में लिखा है वह निम्न प्रकार से हैं-

आदिनाथ 'शिव', मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, गहिणीनाथ, चर्पटनाथ, चैरंगीनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, भर्तृहरिनाथ, गोपीचंदनाथ।

गोरख सिद्धांत संग्रह में नौ नाथों के नाम इस प्रकार बताए गए हैं-

नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमानाथ, गोरखनाथ, चर्पट, जालंधर, मलयार्जुन।

उपरोक्त नामों में नागार्जुन, चर्पटनाथ, जालंधर की गणना सिद्धों में भी होती है। इनमें से नागार्जुन एक प्रसिद्ध रसायनज्ञ थे, जिनका समय संवत् 702 माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि जालंधर से ही सिद्धों से नाथों की परम्परा अलग हो जाती है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमन्वित भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। दुनिया के कोने-कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का भक्ति मार्ग ही था। गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे। नाथ पंथी जोगी कान की लो में बडे-बडे छेद करके स्फटिक के भारी-भारी कुंडुल पहनते थे, इससे वह कनफटे कहलाते थे।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोरखनाथ जी की 28 पुस्तकों का उल्लेख किया है। मिश्रबन्धुओं ने गोरखनाथ को हिन्दी का प्रथम गद्य-लेखक माना है, जो उचित नहीं ठहरता। गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया था। हठयोगियों के सिद्ध-सिद्धांत-पद्धति ग्रंथ के अनुसार ह का अर्थ है- सूर्य तथा ठ का अर्थ है- चन्द्र। इन दोनों के योग को ही हठ योग कहते हैं। गोरखनाथ ने ही षट्चक्र वाला योगमार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया था। इस मार्ग में विश्वास करने वाला हठयोगी साधना द्वारा शरीर और मन को शुद्ध करके शून्य में

www.ignited.in

समाधि लगाता था और वहीं ब्रह्मा का साक्षात्कार करता था। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर है वह, जिसका चित विकार साधन होने पर भी विकृत नहीं होता।

नाथ पंथियों का मुख्य सम्प्रदाय गोरखनाथ योगियों का है। नाथ सम्प्रदाय में बहुत से योगी गृहस्थ भी हुए, किन्तु उनकी मर्यादा बुद्धिहीन मानी जाती है। वास्तव में गोरखनाथ सिद्ध-युग और संत-युग की कड़ी के रूप में हैं। उनके ग्रंथों की प्रश्नात्तरी शैली ने आगे के संत कवियों को प्रभावित किया। 'गोरखबानी' में आत्मा, मन, पवन, नाद, बिन्दु, सुरति आदि का विवेचन मिलता है। "गोरखनाथ के पदों की प्रमाणिकता के बारे में भी संदेह है, किन्तु वे भी कबीर के पदों की भांति प्रचलित हो गये थे। इन पदों में साधना, नैतिकता, गुरू महिमा, मन के संयम, काम-क्रोध या आसक्ति न होना, ब्रह्मचर्य, शारीरिक एवं मानसिक पवित्रता, मांस आदि का परित्याग आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। सिद्धों में तो कुछ वीभत्स और अश्लील परिपाटियां चल पड़ी थी। नाथ पंथियों ने अपने को उनसे अलग रख हठयोग द्वारा ईश्वर प्राप्ति को अपना लक्ष्य बनाया। व्यवहारिक दृष्टि से उनका योगमार्ग पतंजलि के योगसूत्र पर आधारित था। दार्शनिक दृष्टि से उनमें शिव-भक्ति की भावना पाई जाती है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड को वे सत्ता मानते हैं।

गोरखनाथ जी की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां-

जोई जोई पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे

गगन मंडल में ऊँधा कूबा,

वहां अमृत का बासा।

सगुरा होइ सु भरि-भरि पीवै,

निगुरा जाइ पियासा।।

अवध रहिया हाटे वाटे रूप विरष की छाया।

तजिवो काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया।।

नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।

ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।

अंजन मांहि निरंजन भेट्या, तिल मुख भेट्या तेलं।

मूरति मांहि अमूरति पर्स्या, भया निरंतरि खेलं।।

इस प्रकार से उनकी रचनाओं में में आदिकाल की वह शक्ति छिपी मिलती है, जिसने भक्तिकाल की कई प्रवृत्तियों को जन्म दिया। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय लिखते हैं, "गोरखनाथ ने जिस हठयोग का उपदेश दिया है, उसमें परंपरा के अनुसार प्राणायाम से वायु का निरोध कर कुण्डलिनी को उद्बुद्ध करता है, और षट्चक्रों को भेदता हुआ उसे सहस्त्रार या शून्य में मिलता है। जहां शिव का निवास है, वहीं कैलाश है। इसी प्रकार गोरखनाथ के अनुसार जो व्यक्ति चक्रों, नाड़ियों आदि को नहीं जानता, वह सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता। शक्ति की जब शिव के साथ समरसता होती है, तभी योगियों को कैवल्य पद वाली सहज समाधि प्राप्त होती है, जिससे बढ़कर कोई और आनंद नहीं और यह सब गुरू की कृपा से प्राप्त होता है।"

गोरखनाथ की 14 प्रमाणिक रचनाएं मानी गई हैं, जो निम्न प्रकार से हैं-

सबदी, पद, सिष्यादरसन, प्राण संकली, नरवैबोध अभैमात्राजोग, आत्मबोध, पन्द्रह तिथि, सप्तवार महिन्द्र गोरखनाथ बोध, रोमावली, ग्यान तिलक, ज्ञान चैतीसा, पंचमात्रा

गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित ग्रन्थ:

सतनाथ, रामनाथ, धरमनाथ, लक्ष्मनाथ, दरियानाथ, गंगानाथ, बैराग, रावल या नागनाथ, जालंधरिया, आइपंथ, कपिलानी भजनाथ।

नाथ सम्प्रदाय से संबंधित कुछ आलोचकों के विचार:

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- "नाथ पंथ या नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध-मत, सिद्ध-मार्ग, योग मार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत-मत, अवधूत सम्प्रदाय इत्यादि नाम भी प्रसिद्ध हैं।"

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- "सिद्धों की वाममार्गी भोगप्रधान योगसाधना की प्रतिक्रिया स्वरूप आदिकाल में नाथपंथियों की हठयोग साधना प्रारंभ हुई।"

राहुल सांकृत्यायन- "नाथपंथ सिद्धों की परम्परा का विकसित रूप है।"

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार- "नाथों का समय 12वीं सदी से 14वीं सदी के अंत तक है।"

नाथ पंथ की कुछ प्रमुख विशेषताएं थी, जो निम्न प्रकार से हैं- ब्रह्मचर्य का पालन, जात-पात और कर्मकांड का विरोध,

नारी भोग का विरोध, शून्य समाधि, नाड़ी साधना, कुंडलिनी, इंगला, पिंगला, षटचक्र आदि की साधना का प्रचार, रहस्यात्मकता, सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग, प्रतीक और रूपक का प्रयोग।

नाथों का मानना है कि जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है। नाथों का तंत्र बोध सिद्धों का वीभत्स तंत्र नहीं था। चमत्कार वे भी करते थे, पर उनका चमत्कार योगजन्य था। वे ब्रह्मचर्य और योगसाधना पर अधिक बल देते थे। अतः हम कह सकते हैं कि नाथ सम्प्रदाय का हिन्दी साहित्य में अद्‌वितीय योगदान रहा और जिसका प्रभाव भक्तिकाल में भी बखूबी देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास

डॉ. विवेक शंकर, हिन्दी साहित्य

उमेश तिवारी, सूचनापरक हिन्दी साहित्य

लक्ष्मीसागर वाष्र्णेय, हिन्दी साहित्य का इतिहास

डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास

Corresponding Author

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post – Kharwar, District-Rohtak, Haryana